











## विपक्षियों की पूरी साथ दाँव पर

۲۱

झारखंड के मुख्यमंत्री उपर्युक्त सोसेन की जरीने द्वारा दोटांठ में हुई गिरफ्तारी से यह बात साबित हो गई। आश्वय यह है कि विषयी दल सोसेन की अपराधी पर भाजपा पर लगानीतिक विद्वेषता से कार्रवाई करने का आरोप तो लगा रहे हैं केन्तु यह एक बात भी नहीं बताया कि देश से भ्रष्टाचार खत्म करने के लिए उनके पास क्या उपाय मैं पैम है। जिन राज्यों में विषयी दलों का सापेन है, उनमें झाष्टाचार के खिलाफ क्या ठोस कदम उठाए गए हैं। उसके विपरीत केंद्र की भाजपा सकार को उमझ में आ गया है कि श के मतदाता झाष्टाचार के खिलाफ उसकी उद्दिष्ट के समर्थन में हैं।

पॉस्ट्रीया की राजधानी वियना में विश्वविद्यालय की स्थ

1609 - अटलांटिक महासागर में स्थित बरमुडा द्वीप अंग्रेजों का उपनिवेश बना।  
1612 - बंगाल के अंतिम स्वतंत्र अफगान शासक उस्मान खान लोहानी की मौत।  
1872 - भारत के तत्कालीन वायसराय लार्ड मेयो को मारने वाले शेर अली को मार्सिंसी।  
1881 - एंड्रयू वॉट्सन का स्कॉटलैंड की राष्ट्रीय फुटबॉल टीम में पदार्पण, दुनिया के पहले अश्वेत अंतर्राष्ट्रीय फुटबॉल खिलाड़ी बने।  
1904 - ब्रिटेन में मुख्य लाईन पर पहली इलेक्ट्रिक ट्रेन चली।  
1913 - महाराष्ट्र के पहले मुख्यमंत्री यशवंतराव चव्हाण का जन्म।  
1930 - महात्मा गांधी ने अहमदाबाद के साबरमती आश्रम से दांडी मार्च शुरू की।  
1948 - कोस्टा रिका में गृहयुद्ध शुरू हुआ।  
1954 - भारत सरकार ने साहित्य अकादमी की शुरुआत की।  
1967 - इंदिरा गांधी दूसरी बार देश की प्रधानमंत्री बनीं।  
1968 - मॉरीशस को ब्रिटिश से आजादी मिली।  
1970 - अमेरिका में मतदान की न्यूनतम आयु 21 वर्ष से घटाकर 18 वर्ष ढुँड़ी।  
1984 - बॉलीवुड गायिका श्रेया घोषाल का जन्म।  
1993 - मुंबई में हुए अनेक बम विस्फोट से 257 लोगों की मौत और सैकड़ों घायल।  
2003 - सर्बिया के प्रधानमंत्री जोरान जिनजिब की बेलग्रेड में हत्या।

प्रेदण का उण्ड-पुण्ड का जटाष्ठूल  
यंकज शर्मा

पैछले हफ्ते मैंने टीवी बहसों में  
माजपा के हर प्रवक्ता से पूछा कि 12  
ताख मतदान केंद्रों में से हर एक पर  
किसी विचार का लाभ करता है। उनकी जवाबों  
में यह था कि इसका लाभ अब तक नहीं  
हुए दिखाई दे रहे हैं। उन के शब्द-  
प्रवाह में बिखराव है और इसलिए वे  
मोदी की गारंटी की तलैया फांद कर

370 अतिरिक्त वोट का मतलब क्या होता है, इसका हिसाब जानते हैं? करीब 44 करोड़ अतिरिक्त वोट। 2019 के लोकसभा चुनाव में भाजपा को कुल मिला कर तकरीबन 23 करोड़ वोट मिले थे। उन में 44 करोड़ अतिरिक्त वोट जुड़ने का मतलब है कि 2024 में भाजपा के 57 करोड़ वोट। इसका अर्थ है कुल मतदान के 70 फ़ीसदी वोट भाजपा पाए। पिछले चुनाव में भाजपा को 37.7 प्रतिशत वोट मिले थे। तो क्या 2024 में उसके मतों में 32 फ़ीसदी का इजाफ़ा हो जाएगा?

वह तो तय है कि 2024 में नरेंद्र भाई दोषी अपनी भारतीय जनता पार्टी को

370 सीटों के आंकड़े पर नहीं पहुंचा पाएगे। मगर इस से भी बड़ा सवाल यह है कि राहुल गांधी अपनी कांग्रेस को किस आंकड़े तक पहुंचा पाएगे? जमीनी हालत ऐसे लग रहे हैं कि इन विर्मिंग्हम में स्पष्ट बहुमत के 272 अंक तक पहुंचने में भाजपा के पसीने छूट जाएंगे। मगर क्या धरती पर वे अंककुरूट रहे हैं, जो इंडिया समूह को स्पष्ट बहुमत के अंक तक पहुंचा दें?

प्रतदाताओं का बहुमत भले ही 'मोशा-भाजपा' के चंगुल से आजाद होने को छपटा रहा हो, मगर क्या समूचे विषय और खासकर कांग्रेस की सागरनिक तैयारियों में चुनाव-आरोहण की कोई ताब दिखाई दे रही है?

यह तो साफ है कि नरेंद्र भाई भीतर-

## उत्तर प्रदेश में भाजपा के जातीय समीकरण के सामने परस्त विपक्ष

आशाष वाशष्ट  
क. पाणी गजनीवि

के पुराना राजनारंब कहावत है कि दिल्ली का रास्ता लखनऊ से होकर जाता है। कहते हैं यहां पर नई नें जितनी सीटें जीतीं, उसके लिए नई तक पहुंचने का रास्ता उतना ही आसान है। उत्तर प्रदेश में विजय का परचम लहराने लिए जातियों की समझ ही सब कुछ है। यहां बोट भी नाम पर बोट भी तभी मिलता है, जातियों को सही तरह से साधा जाए। बात ओबीसी की हो, मुस्लिम की हो या सवर्णज जो को साधने की, सभी का उत्तर प्रदेश की असत में अहम योगदान रहता है। यहां के में एक कहावत चर्चित है कि यहां बोटर को बोट नहीं देते बल्कि जाति को देते हैं और है कि सबसे ज्यादा 80 लोकसभा सीटें उत्तर प्रदेश पर हर पार्टी की नजर है। यहां तीव्र जनता पार्टी से लेकर सपा, कांग्रेस व बसपा भी अपना जनाधार मजबूत करने वाली ताकत के साथ जुट गई है। जाति, धर्म वर्ग के आधार पर अपने-अपने बोट बैंक दुरुस्त करने के लिए खास रणनीति बनाई रखी है। इस मद्देनजर जो एक कम्युनिटी पार्टी की हर राजनीतिक पार्टी की नजर में है, ओबीसी समुदाय है। प्रदेश में मतदाताओं एक बड़ा दिस्सा ओबीसी से आता है और उनकी ओर उनका झुकाव होता है, वही पार्टी सबसे मजबूत स्थिति में मानी जाती है। में इहें लुभाने के लिए हर पार्टी अपने-अपने स्तर पर अपनी-अपनी रणनीति के सार कोशिश कर रही है। उत्तर प्रदेश में फीसी बोट का प्रतिशत 52 फीसदी है। ये फीसी बोट, यादव और गैर यादव में बटा है। यादव बोट 11 फीसदी है तो गैर यादव में फीसदी है। ओबीसी बोट में यादव जाति बाद सबसे ज्यादा संख्या कुर्मी मतदाताओं

का हा इसके बाद माय और कुशवाहा अपने चौथे नंबर पर लोड जाति है। पिछ़ा वर्ग में पांचवीं सबसे बड़ी जाति के रूप में मलवाहा (निशाद) हैं। ओबोसी वोट बैंक में राजभराव बिरादरी की आबादी दो फीसदी से कम है और राज्य में दलित वोट बैंक, जाटव और गैरजाटव में बंटा हुआ है। दलितों में जाटव जाति की संख्या कुल वोट का 54 फीसदी है। दलितों में 16 फीसदी पासी और 15 फीसदी वाल्मीकियों जाति है। राज्य में सर्वांग मतदाता की आबादी 23 फीसदी है। इसमें सबसे ज्यादा 11 फीसदी ब्राह्मण, आठ फीसदी राजपूत और दो फीसदी कायस्थ हैं। देश में उत्तर प्रदेश मुस्लिम जनसंख्या के हिसाब लिहाज से चौथा सबसे बड़ा राज्य है। यहां पर लगभग 20 प्रतिशत मुस्लिम रहते हैं। 2019 के चुनाव में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा)-अपना दल गठबंधन को 50.76 फीसदी वोट मिले थे। भाजपा ने 62 और अपना दल ने दो सीट जीती थीं। सपा-बसपा और आरएलडी गठबंधन को 38.89 फीसदी वोट मिले थे। सपा ने पांच और बसपा ने 10 सीटें जीती थीं। 2019 के लोकसभा चुनाव कांग्रेस के लिए सबसे शर्मनाक रहा। उसे 6.31 प्रतिशत वोट शेरय के साथ सिर्फ एक सीट पर जीत मिली। अगर साल 2014 के लोकसभा चुनाव की बात करें तो उत्तर प्रदेश में भारतीय जनता पार्टी को प्रचंड बहुमत के साथ 71 सीट मिलीं और पार्टी के खाते में 42.3 फीसदी वोट गए। इस चुनाव में बहुजन समाज पार्टी और आरएलडी का खाता भी नहीं खुला। बसपा को 19.6 फीसदी वोट मिले। सपा ने पांच ही लोकसभा सीट जीती उसे कुल 22.2 फीसदी वोट मिले। कांग्रेस ने दो सीटें जीती और उसका बोट फीसदी 7.5 रहा।  
थिंक टैक सोसायटीएस और लोकनीति के एक सर्वे के मुताबिक 2019 के चुनाव में 82

प्राचीन भारतीय संस्कृत विद्या



## जाताय जनगणना

फासदा ब्राह्मणों ने भाजपा आरे उत्तर सहयोगियों के लिए वोट किया। 89 फीसदी राजपूतों ने भाजपा को वोट दिया। वैश्यों का 70 फीसदी वोट भाजपा के खाते में गया। पश्चिमी उत्तर प्रदेश में निर्णायक माने जाने वाले जाटों का 91 फीसदी वोट भाजपा को मिला। वर्ण व्यवस्था की अन्य जातियों में से 5 फीसदी ने कांग्रेस, 84 फीसदी ने भाजपा गठबंधन और 10 फीसदी ने सपा-बसपा गठबंधन को वोट किया। ओबीसी की दूसरी बड़ी जाति कोइरी-कुर्मी का 80 फीसदी वोट भाजपा, 14 फीसदी वोट सपा-बसपा, कांग्रेस को 5 फीसद और अन्य दलों को 1 फीसदी वोट मिला। यादव-कोइरी-कुर्मी के अलावा ओबीसी की अन्य जातियों में से 72 फीसदी ने भाजपा, 18 फीसदी ने सपा-बसपा, 5 फीसदी ने कांग्रेस और 5 फीसदी ने अन्य दलों को वोट किया। अनुसूचित जाति की बड़ी जातियों में से एक जाटव है। इस जाति का 75 फीसद वोट सपा-बसपा, 17 फीसद भाजपा, 1 फीसद कांग्रेस और अन्य दलों को 7 फीसद वोट मिल। एससी की अन्य जातियों के बाटों में से भाजपा गठबंधन को 48 फीसद, सपा-बसपा गठबंधन को 42 फीसद, कांग्रेस को 7 फीसद और 3 फीसद ने अन्य दलों को वोट किया। उत्तर प्रदेश के 73 फीसद मुसलमानों ने सपा-बसपा गठबंधन, 14 फीसद ने कांग्रेस, 8 फीसद ने भाजपा गठबंधन और पांच फीसद ने अन्य दलों को वोट किया। अन्य जातियों में से 50 फीसद ने भाजपा गठबंधन, 35 फीसद ने सपा-बसपा, 1 फीसद ने कांग्रेस और 14 फीसद ने अन्य दलों को वोट किया। वास्तव में, सामान्य, गैर यादव ओबीसी, अन्य अति पिछड़े, और गैर जाटव दलित पर भारतीय जनता पार्टी की अच्छी पकड़ है। भारतीय जनता पार्टी को साल 2014, 2019 के लोकसभा चुनाव में और साल 2017 तथा 2022 के विधानसभा में अच्छी-खासी संख्या में ओबीसी वोटर्स का साथ भला सपा का नातवा स असंतुष्ट ओबीसी समुदाय ने भाजपा का दामन थामा। भाजपा अपने इस समर्थन को आने वाली लोकसभा चुनाव में बरकरार रखना चाहती है। भारतीय जनता पार्टी ओबीसी वोटर्स में अपना जनाधार बढ़ाने के लिए तमाम तरह के जतन कर रही है। इसका मकसद गैर-यादव पिछड़ी जाति के लोगों को लामबंद करना है। इसके अलावा ओम प्रकाश राजभर को एनडीए में लाना भाजपा की ओबीसी नीति का ही नीतीजा है। संजय निषाद और अनुप्रिया पटेल पहले से ही भाजपा के साथ हैं। आरएलडी के एनडीए का हिस्सा बनने से यह वोट बैंक और मजबूत होगा। ओबीसी को समाजवादी पार्टी का कोरा वोट माना जाता है। इनमें भी यादव वोटर्स सपा के समर्पित समर्थक हैं। सत्ता पर काबिज भाजपा ने अपनी योजनाओं और राजनीतिक रणनीति की मदद से सपा के इस वोट बैंक में संघर्षमारी की है।

**द** मुस्लिम वोटों का  
राजनीति करने वाले  
भाईएमआईएम के प्रमुख असद्वदी



के तहत गोशामहल को छड़कर सभी विधानसभा क्षेत्रों पर एआईएम आईएम का कब्जा है। गोशामहल से भाजपा के फायर ब्रांड नेता टी. राजा विधायक हैं। भाजपा ने 2014 और 2019 के लोकसभा चुनाव में भगवंत राव पवार को अपना उम्मीदवार बनाया था जोकि ओवैसी से भारी अंतर से चुनाव हार गये थे। इस बार हैदराबाद से भाजपा प्रत्याशी तय करने में आरएसएस से जुड़े संगठन मुस्लिम राष्ट्रीय मंच के प्रमुख और संघ के वरिष्ठ नेता इंद्रेश कुमार ने बड़ी भूमिका निभाई। उन्होंने इस क्षेत्र में मुस्लिम महिलाओं के बीच काम कर रही माधवी लता का नाम सुझाया जिस पर पार्टी में सहमति बन गयी और उनकी उम्मीदवारी की घोषणा हो गयी। खुद माधवी लता भी इस बात को मानती है कि उन्हें चुनाव में मुस्लिम महिलाओं का सहयोग मिलेगा। उनका कहना है कि अगर हिंदू-मुस्लिम मुद्दे को देखा गया होता तो भाजपा मुझे उम्मीदवार नहीं बनाती। उनका कहना है कि मैं मुस्लिमों के बीच काम करती हूँ और उन्हें अपना मानती हूँ। माधवी लता का कहना है कि मैं तीन तलाक की विरोधी रही हूँ और हिंदुओं से जुड़े विषयों को लेकर भी सक्रिय रही हूँ।

## और सेंध लगाती भाजपा

## अरुण पटेल

लोकसभा चुनाव में 400 पार की जुगत करने के लिए जहां भाजपा अपने सहयोगियों की संख्या बढ़ाती जा रही है तो वहीं दूसरी ओर कांग्रेस नेताओं का पलायन भी भाजपा की ओर उसी तेजी से हो रहा है। पूर्व कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी की न्याय यात्रा जहां-जहां से गुजर रही है वहां भी कोई न कोई बड़ा कांग्रेस नेता भाजपा में शामिल हो रहा है। मध्यप्रदेश में भी मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव और प्रदेश भाजपा अध्यक्ष विष्णुदत्त शर्मा कांग्रेस के बड़े-बड़े नेताओं को अपनी पार्टी में शामिल करने का अभियान छेड़ रहा है ताकि कांग्रेस को मैदान के साथ ही मनोवैज्ञानिक शिक्षण भी दें तथा कांग्रेस नेताओं व कार्यकर्ताओं में जो हार की हताशा से उबरने की कोशिश कर रहे हैं फिर नैराश्य की

राजूखेड़ी, समाजवादी पार्टी के पूर्व विधायक और अब कांग्रेस नेता बने अर्जुन पलिया, पाठ्य पुस्तक निगम के अध्यक्ष रहे आलोक चंसोरिया, भोपाल नगर पालिक निगम के सभापति रहे कैलाश मिश्रा तथा योगेश शर्मा, अतुल शर्मा, सुभाष यादव, दिनेश ढिमोले, जसपाल सिंह अरोरा शामिल हैं। इस अवसर पर सुरेश पचौरी ने कहा कि भगवान् श्रीराम जी की प्राण प्रतिष्ठा का आयोजन हो रहा था जिसके निमंत्रण पत्र को अमर्यादित भाषा का इस्तेमाल कर जब उक्करा दिया गया तब मुझे आघात पहुंचा, मैं अयोध्या में राम मंदिर का पक्षधर आरंभ से रहा हूँ निमंत्रण पत्र को अस्वीकार करने की आवश्यकता नहीं थी। मैं स्वामी शंकराचार्य स्वरूपानंद का दीक्षित शिष्य हूँ मुझे तत्कालीन प्रधानमंत्री राजीव गांधी ने भेजा कि जाओ शंकराचार्य जी से पछ कर

# ट्राफाकिंग के क्षेत्र में अब हाँ रहा है आधुनिक तकनीक का प्रयोग

से-जैसे आधुनिक  
संचार माध्यमों  
स्वरूप में परिवर्तित  
हो रहा है उसी प्रकाशन के लिए बड़ी दृष्टि  
भी तेजी परिवर्तन है क्योंकि

An illustration showing two dark-skinned hands emerging from a yellow background. The hands are joined together, holding a small red book. The book has the word 'Hindi' written on its cover in white, with a small sun-like icon above the letter 'i'. The hands are positioned as if presenting or offering the book.

जो जान दाने न पियपरा होनार बात परत्ता रहता है। इस तरह प्रकार की वेबसाइट जिनके माध्यम से ऐसे होनहार युवकों छला जा रहा हो तब आवश्यकता इस बात की है कि इन सबके विरुद्ध कठोर कार्यवाही किये जाने के लिए संबंधित विभाग को सक्रिय होना होगा। एक अनुमान के अनुसार विदेशों में बैठा हैकर्स इतना शक्तिशाली रहता है कि पल भर में अपनी वेबसाइट को बदल देता है और ऐसे साजिशकर्ता पर कोई त्वरित कार्यवाही हो पाने में संबंधित विभागों को जूँझना पड़ता है। भारत में लागू साईबर क्राइम टेक्नॉलॉजी एकत लगभग 23-24 वर्ष पुराना है जिसमें बहुत कुछ किये जाने की महती आवश्यकता है। हर रोज इन क्रिमिनल्स के कार्य स्वरूप में हो रहे तेजी से बदलाव से भारत का साईबर क्राइम ब्रॉच सम्भवत- सक्रिय और प्रभावी कार्य करने की दिशा में पूर्ण रूप से सक्षम नहीं हो पा रहा है अभी भारत की साईबर क्राइम टेक्नॉलॉजी और इसके विधिक तौर-तरीकों में एक बड़े बदलाव की आवश्यकता है जिसमें ट्रैफिकिंग जैसे प्रमुख अंग को भी सम्प्रिलित किये जाना आवश्यक है। ट्रैफिकिंग चाइल्ड जॉब के लिए की जाये, भारत में हो अथवा विदेशों में हो तो भी इसे एक मजबूत और प्रभावी कानून के माध्यम से इस पर अंकुश लगाये जाने की जरूरत है अन्यथा आम नागरिक साईबर क्राइम के माध्यम से टगा जाता रहेगा और बेरोजगार युवा नौकरी और अच्छे पैकेज के लालच में भारत से बाहर जाकर उन देशों में भी ऐसा ही टगा जाता रहेगा जैसे एक मासम व्यक्ति जानकारी के अधार से साईबर का नकारा ना नहीं जा सकता क्योंकि भाजपा ऐन केन प्रकारेण कांग्रेस को राजनीतिक फलक पर अप्रासंगिक करने की मुहिम छेड़े हुए है। लेकिन इसके साथ ही कांग्रेस के उन कार्यकर्ताओं व नेताओं में उमीद भी जाग रही है कि अब उहें अपनी पार्टी में कुछ मौका मिल जाये जिन्हें नेताओं की गणेश परिक्रमा न करने के कारण कोई मौका नहीं मिल पाता था। कांग्रेस ने 39 उमीदवारों की जो पहली सूची जारी की है उसमें छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री रहे भूपेश बघेल और अभी तक सबको चुनाव लड़ने वाले और राज्यसभा के माध्यम से सांसदी का लाभ लेने वाले के सी.वेणुगोपाल को भी अब लोकसभा चुनाव लड़ना होगा। इस प्रकार कुछ और कांग्रेस नेताओं की अग्नि परीक्षा अब चुनाव में हो सकती है जो अभी तक चुनाव से बचते रहते थे। मध्यप्रदेश में कांग्रेस के एक बड़े नेता पूर्व केंद्रीय मंत्री और पूर्व प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष सुरेश पांचौरी ने आज अपने अधिकांश समर्थकों के साथ भाजपा में प्रवेश कर लिया है। जो लोग भाजपा में शामिल हुए हैं उनमें इंदौर के पूर्व कांग्रेसी विधायक विश्वाल पटेल, संजय के विकास के लिए राजनीति करते











